कौन मनुष्य और कौन नहीं...

● मक्सीम तांक

देश में हिन्दू सादायिक फासीवादी ताकतों का उद्धत "राष्ट्रवादी" अभियान लगातार जारी है। संघ परिवार के सभी मुख और मुखौटे अपना खेल चतुराई के साथ खेलते जा रहे हैं। पिछले दिनों इस जमात के एक चतुर खिलाड़ी अटल बिहारी वाजपेयी ने अपना उदारवादी मुखौटा फाड़कर यह उचारा कि बाबरी मस्जिद का विध्वंस राष्ट्रीय भावनाओं का प्रकटीकरण था। इसी जमात के एक अग्निमुखी सरदार शिवसेना के सुप्रीमो बाल ठाकरे ने तो पिछले दिनों अपनी चिरपरिचित धमकाऊ शैली में यहां तक कह डाला कि मुसलमानों को मताधिकार से वंचित कर दिया जाना चाहिए। वैसे उन्होंने कोई नयी बात नहीं कहीं। इस जमात के गुरु गोलवलकर अपनी पुस्तक "वी, अवर नेशनहुड डिफाइन्ड" में काफी पहले ही मुसलमानों को हिन्दुस्तान में दूसरे दर्जे का नागरिक बना देने की मंशा का इजहार कर चुके हैं। बाल ठाकरे ने दूसरे शब्दों में यही बात बस अपने खास अंदाज में दुहरा दी है। दरअसल, बाल ठाकरे जैसे लोग जिस प्रजाति के प्राणी हैं, उस प्रजाति का इतिहास ही मानवता विरोधी जघन्य अपराधों से भरा पड़ा है। तो क्या ऐसे में इस प्रजाति के लोगों को इन्सानों की सूची से ही खारिज कर देने की सिफारिश नहीं कर देनी चाहिए? पश्चिमी बेलारूस के क्रान्तिकारी कवि मक्सीम तांक (जन्म:1912) अपनी इस कविता में यही सिफारिश कर रहे हैं। —संपादक

जनगणना अधिकारियों के लिए जब
तैयार किये जा रहे हों आवश्यक निर्देश
जरूरी है वक्त पर बता देना—
किसे मनुष्य माना जाये और किसे नहीं।
इसलिए कि हम यानी जिन्हें मालूम है
कितना भारी होता है हल
और कितनी भारी राइफल,
कितनी यातनापूर्ण होती है जुदाई
और कैसी होती है विदाई
जिनके लौटने की कोई उम्मीद नहीं!

हमसे कभी स्वीकार नहीं हो सकेगा
मनुष्यों में शामिल किया जाना
उन लोगों का
जिन्हें आज भी अभिशाप दे रही हैं
बेसहारा बहनें और माताएं
अभिशाप दे रही है
भस्मावशेषों से भरी
यह पृथ्वी।

(अनुवाद : वरयाम सिंह)